उड़े रंगों की बौछार, बांटे खुशियां हजार

कोई झूमे भंग के नशे में कोई फाग के गीतों में
दिल से दिल मिल जाए यही मजा है होली में

मुबारक हो आपको ये रंगों की होली
रंगों से भरी इस दुनिया में, रंग रंगीला त्योहार है होली

हर तरफ यहीं धूम है मची, बुरा ना मानो होली है होली

रंग, उमंग, हास-परिहास और उल्लास का पर्व होली मुख्य रूप से रंगों का त्योहार है। इस दिन लोग एकजुट होकर खुशियां मनाते हैं और एक दूसरे को प्यार और स्नेह के रंगों में डुबोकर अपना उल्लास जाहिर करते हैं। हास-परिहास होली की आत्मा है। हँसना आदमी की सेहत के लिए लाभप्रद माना गया है। रंगों के त्योहार होली का सबको आतुरता से इंतजार रहता है। फाल्गुन महीना मौज़ मस्ती, उत्साह, मन की चंचलता से भरा होता है।

फागुन का महीना आते ही जैसे समूचा वातावरण रंगीन हो जाता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को यह त्योहार मनाया जाता है। होली का नाम सुनते ही हमारी रग रग फड़कने लग जाती है। यह एक ऐसा अनूठा पर्व है जब लोग अपने गिले-शिकवे ख़त्म कर पुराने दुश्मन को भी गले लगा लेते हैं। होली उन लोगों को भी हंसी-ठिठोली करने पर मजबूर कर देती है, जो धीर - गंभीर भाव-भंगिमा में रहते हैं। इस दिन बच्चे से बुजुर्ग तक सभी उम्र के लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल आदि से होली खेलते हैं। ढोल मजीरे बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को गुलाल व रंग लगाया जाता है। सचमुच होली में रंग है, प्यार है, उमंग है तरंग, आनंद और उल्लास है। यह त्योहार जाति-भेद, छोटा-बड़ा अमीरी-गरीबी से ऊपर उठकर मित्रता और भाई-चारे का सन्देश देता है।

इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। होली का यह रंग बिरंगा त्योहार मुख्य रूप से दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन होलिका दहन होती है। दूसरे दिन धुलेंडी मनाते है। इस दिन एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल लगाते हैं। साथ ही ढोल बजा कर होली के गीत गाते हैं। देश हमारा इतना रंगीला है कि इसका हर रंग पूरी दुनिया पर चढ़ गया है। बहुत से स्थानों पर लोग ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। धुलेंडी के दिन एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं।

बच्चे और युवा अपने बड़ों के पांव छूते है। एक दूसरे के गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं। रंगों के त्योहार होली पर हास्य-व्यंग्य का तड़का लग जाए तो यकीनन मजा दोगुना हो जाता है। होली पर व्यंग्य लेखन की परंपरा बहुत पुरानी रही है। हास्य गीतों और व्यंग्य की बौछारों के बिना होली अधूरी सी लगती है। बुरा न मानो होली है के भाव के साथ होली पर रंगों की बौछारों के साथ हास्य व्यंग्य के शब्द बाण भी छोड़े जाते हैं। हास्य व्यंग्य साहित्य की एक विधा है जो उपहास, मजाक और ताने का मिलाजुला स्वरुप है। मजाक एक परंपरा की तरह होली के पावन त्योहार का हिस्सा है। व्यंग्य विचार से पैदा भी होता है और अभिव्यक्ति से सामना कराता है। व्यंग्य विषंगति, झूठ और पाखंड का भड़ाफोड़ कर सत्य का अपने ढंग से साक्षात् कराता है। व्यंग्य फब्तियां कसती हैं जो हंसाती,गुदगुदाती और तिलमिलाती हैं। यह मस्ती और मजाक से भरा हुआ बांका पर्व है।

आज के दिन हर कोई अपने-अपने अंदाज में होली के रंगों में सराबोर है। होली की उपाधियों का एक अलग सा आनंद है। होली पर उपाधियों की पुरानी परम्परा है। उपाधियां हास-परिहास का एक सशक्त माध्यम है। इस अवसर पर शासक से सेवक तक मजेदार उपाधियां प्रदान की जाती है और कोई भी इन उपाधियों का बुरा नहीं मानता है। हालांकि कोरोना ने होली का परम्परागत उत्साह हम से छीन लिया है। फिर भी समय बड़ा बलवान है। कोरोना के माहौल के बावजूद होली का उत्साह किसी भी तरह कम नहीं होगा। हँसी ठिठोली न हो तो रिश्तों के रंग भी फीके पड़ जाते हैं। होली सिर्फ रंगों से नहीं बनती, उसमें हुड़दंग का तड़का भी ज़रूरी है।

बाल मुकुंद ओझा
होली परिशिष्ट के अतिथि संपादक वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राष्ट्रदूत होली उपाधियां बाँटने के लिए अपनी तीखी नजर और पैनी कलम के लिए पहले से ही ख्यात हैं। राष्ट्रदूत किसी का दिल नहीं दुखाता मगर हर एक को खुश भी नहीं रख सकता। राष्ट्रदूत परिवार अपनी परंपरा का निर्वहन करते हुए एक बार फिर हास्य - व्यंग्य की फुव्वारों के साथ उपाधियों का पिटारा लेकर आपके समक्ष उपस्थित हुआ है। होली पर हंसाने और गुदगुदाने की गारंटी हैं ये उपाधियाँ। ऐसी उपाधियां जिससे लोगों को बुरा न लगे और उनकी बात सामने वाले तक भी पहुंच जाए। इसलिए कहा जाता है, बुरा न मानो होली है। आशा है की सदा की भांति आप इस रंगोत्सव की गरिमा के अनुरूप हास-परिहास से भरी चुटीली उपाधियों को सहृदयता से स्वीकार करेंगे।

राष्ट्रदूत परिवार की ओर से आप सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

गुरुवार, 17 मार्च : होलिका दहन मुहूर्त
रात्रि 09 : 02 से 10:14, अवधि - 01 घण्टा 12 मिनट्स
पूर्णिमा तिथि आरंभ - दिन में 1: 29 (17 मार्च)
पूर्णिमा तिथि समाप्त - दिन में 12: 46 (18 मार्च)

शुक्रवार, 18 मार्च : रंगवाली होली
भद्रा पूंछ - रात्रि 09 : 03 से 10:13, भद्रा मुख - रात्रि 10 :13 से 0 : 09

सियासत के सूरमा

कलराज मिश्र	- सीधी सट्ट
अशोक गहलोत	- बेताल पच्चीसी
डॉ. सीपी जोशी	- इस हाथ दे उस हाथ ले
शांति धारीवाल	- रणनीतिकार
डॉ बीडी कल्ला	- दूध का जला
महेश जोशी	- पूत कपूत तो क्यों धन संचय
प्रताप सिंह खाचरियावास	- ज्यों ज्यों भीगे काम्बली, त्यों त्यों भारी होय
उदयलाल आंजना	- दूर के ढोल सुहावने
लालचंद कटारिया	- घाट घाट का पानी
हेमाराम चौधरी	- नया नौ दिन, पुराना सौ दिन
रमेश मीणा	- अपनी करनी-पार उतरनी
राजेंद्र यादव	- मुंह चिकना, पेट खाली
शकुंतला रावत	- अंटी में न धेला, देखन चली मेला
टीकाराम जूली	- गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज
जाहिदा खान	- बीती ताहि बिसारि दे
विश्वेंद्र सिंह	- अफलातून का नाती
भजन लाल जाटव	- नौ की लकड़ी, नब्बे खर्च
सुखराम बिश्नोई	- आसमान से गिरा खजूर पर अटका
ममता भूपेश	- अपना रख, पराया चख
मुरारी लाल मीणा	- दिन दूनी रात चौगुनी
परसादी लाल मीणा	- अंधेर नगरी चौपट राजा
सालेह मोहम्मद	- बने के सब यार हैं
सुभाष गर्ग	- आंख्या देखी परसराम, कदे न झूठी होय
प्रमोद भाया	- बैठे से बेगार भली
राजेंद्र सिंह गुढ़ा	- अपना काम बनता भाड़ में जाये जनता
अर्जुन बामणिया	- चिकना घड़ा
महेंद्रजीत सिंह मालवीय	- नाम बड़े और दर्शन छोटे
रामलाल जाट	- बद अच्छा बदनाम बुरा
अशोक चांदना	- अंधा बांटे रेवड़ी, फिर अपने देय
भंवर सिंह भाटी	- न ऊधौ का लेना, न माधो का देना
गोविंद राम मेघवाल	- थोथा चना, बाजे घना

कांग्रेस

अजय माकन	- मान न मान, मैं तेरा मेहमान
सचिन पायलट	- एक और एक ग्यारह
गोविंद डोटासरा	- ज्यादा जोगी, मठ उजाड़
हरीश चौधरी	- अंडे सेवे कोई, लेवे कोई
रघु शर्मा	- अब ताणी तो बेटी बाप कै ही है
महेंद्र चौधरी	- मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक
रामेश्वर डूडी	- दान की बछिया के दांत नहीं गिनते
डॉ चंद्रभान	- घी का लडडू टेढ़ा ही भला
ब्रजकिशोर शर्मा	- गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास
डॉ राजकुमार शर्मा	- दूर के ढोल सुहावने
डॉ जितेंद्र सिंह	- आँ तिलां में तेल कोनी
राजेंद्र पारीक	- मैं भी हूं
दीपेंद्र सिंह शेखावत	- आटे के साथ घुन की पिसाई
इंद्राज गुर्जर	- एक घर तो डाकण भी टाले है
अमीन कागज़ी	- सूरदास की काली कमरी, चढ़े न दूजो रंग
रफीक खान	- नाच ना जाने आंगन टेढ़ा
वेद प्रकाश सोलंकी	- बासी बचे, न कुत्ता खाये
खिलाड़ी लाल बैरवा	- खिसियानी बिल्ली
गिर्राज सिंह मलिंगा	- अपनी डफली अपना राग
जीआर खटाना	- खोदा पहाड़ निकली चुहिया
दानिश अबरार	- आदै पाणी न्याव होय
अमीन खान	- घर का जोगी जोगना
मदन प्रजापत	- गरीब की जोरू सब की भौजाई
जोगेंद्र सिंह अवाना	- ऊंची दुकान फीके पकवान
महादेव सिंह खंडेला	- चलती का नाम गाड़ी
बाबूलाल नागर	- जैसी करनी वैसी भरनी
कृष्णा पूनिया	- आम के आम गुठलियों के दाम
राकेश पारीक	- अंधा क्या चाहे बस दो आंखें
राजेंद्र चौधरी	- एकली लकड़ी जळ कोनी
प्रशांत सहदेव शर्मा	- आंधी के आम
अश्क अली टाक	- कंगाली में आटा गीला
ज्योति खंडेलवाल	- अभागियो टाबर त्युंहार नै रूसे
अर्चना शर्मा	- एक तो गिलोय वह भी नीम चढ़ी
गोपाल सिंह इडवा	- अपनी पगड़ी अपने हाथ
संयम लोढ़	- दाल-भात में मूसलचंद
परसराम मोरदिया	- दो लड़े, तीसरा ले उड़े

भाजपा

वसुंधरा राजे	- लड़ाई आर पार की
गुलाबचंद कटारिया	- जुबान संभाल कर
अरुण सिंह	- गुटबंदी खाये जा रही है
सतीश पूनिया	- लक्ष्य की और
राजेन्द्र राठौड़	- तीर निशाने पर
चंद्रशेखर	- कारपोरेट कल्चर वाले भाईसाहब
कालीचरण सराफ	- मंदी की मार
अशोक परनामी	- बुझती अगरबत्ती
माधोराम चौधरी	- नागौरी मेथी
किरोड़ीलाल मीना	- खूंटा गाड़ दिया
घनश्याम तिवाड़ी	- माया मिली ना राम
अशोक लाहोटी	- पैसे की माया
राजपाल शेखावत	- दूसरे के सहारे कश्ती
अशोक सैनी	- सूनी पंचायती
दीया कुमारी	- सोने की चिड़िया
महेंद्र यादव	- बाबा की माया
मोहनलाल गुप्ता	- साइलेंट मोड
अरूण चतुर्वेदी	- राम भरोसे
अलका गुर्जर	- बीजेपी की सोनिया गांधी
श्रवण बगड़ी	- नौसिखिया नेता
जितेन्द्र गोठवाल	- मॉनिटर का जुगाड़ या काम चलाऊ नेता
नरपतसिंह राजवी	- राजनीतिज्ञ
राघव शर्मा	- कन्फ्यूज मैन
मुकेश दाधिच	- मधुर मुस्कान
भजनलाल शर्मा	- कार्यालय बाबू
राजकुमार भूतड़ा	- सोने का अंडा
रामलाल शर्मा	- बालाजी का वीर
राज्यवर्द्धन राठौड़	- दमादम मस्त कलंदर
ओम माथुर	- तीसरी आंक
रामचरण बोहरा	- चलता फिरता

शासन के तीरंदाज

उषा शर्मा	- ना काऊ से दोस्ती ना काऊ से बैर
रविशंकर श्रीवास्तव	- पाँव में पड़ गये छाले
वीनू गुप्ता	- अभी लाइन में है
सुबोध अग्रवाल	- कभी तो सुबह होगी
पवन कुमार गोयल	- हथेली में रेखा ही नहीं थी
आर. वैकटश्वरन	- खुशी खुशी कर दो विदा
सुधांश पन्त	- हम तो चले परदेश
अभय कुमार	- विवादों से दूर
अखिल अरोड़ा	- अब निशाने पर
अपर्णा अरोड़ा	- भले घर की बहू
शिखर अग्रवाल	- हिम्मत नहीं हारी
संदीप वर्मा	- विभाग तो चलेगा ही
कुलदीप रांका	- तलवार म्यान में ही रखते है
श्रेया गुहा	- जंगल में मोर नाचा
आनन्द कुमार	- घपलों से दूर
प्रवीण गुप्ता	- कसूर क्या है
भास्कर सांवत	- समय के साथ
अश्वनी कुमार भगत	- धीमी चाल
कुन्जी लाल मीना	- जैसा देश वैसा भेष
अजिताभ शर्मा	- धोखा खा गये
आलोक गुप्ता	- सबकी पंसद
दिनेश कुमार	- भेदभाव से दूर
राजेश यादव	- रूतबा कायम है
हेमन्त कुमार गेरा	- चर्चाओं से दूर
नवीन महाजन	- कोई गम नहीं
गायत्री राठौड़	- पर्यटक
वैभव गेलरिया	- दवा असली है
टी. रविकान्त	- मेहनती उद्योगपति
सुबीर कुमार	- राज के ठाठ
भवानी सिंह देथा	- अपनी मस्ती में मस्त
विकास भाले	- देवताओं की शरण में
मुग्धा सिन्हा	- स्पष्टवादित
नवीन जैन	- दबंग
कृष्ण कान्त पाठक	- बेदाग
आशुतोष पेडनेकर	- होशियारी
पृथ्वीराज	- अब कोई व्यवधान नहीं
भानू प्रकाश	- परिश्रम नहीं होता है
डॉ. वीना प्रधान	- मेरा क्या होगा
रवि जैन	- कुछ नहीं है
समित शर्मा	- पाबन्द करो
अरूणा राजोरिया	- इन्श्योरेंस कब तक
डॉ. आयुषी अजय मलिक	- बहादुर पशु पालक
जोगाराम	- दीन दुखियों का सहारा
पी.सी किशन	- नजर नहीं आते
कैलाश चन्द मीणा	- क्या क्या याद करू
गजानन्द शर्मा	- मेरा क्या दोष है
सुरेश चन्द गुप्ता	- समझदारी
विनीता श्रीवास्तव	- अजमेर कब भेजोगे
जितेन्द्र कुमार उपाध्याय	- मेवाड़ की यादे
गौरव गोयल	- हुक्म हाजिर हूं
आरती डोगरा	- निकटता से दूर
वी. सरवन कुमार	- छुट गई गाड़ी
उर्मिला राजोरिया	- सभ्यता की सूरत
सुधीर कुमार शर्मा	- वित्त विशेषज्ञ
नरेश ठकराल	- दो दूनी रात चोगनी
बाबूलाल मीना	- जो ईश्वर की इच्छा हो
विष्णु चरण मलिक	- काम में दम है
शुचि त्यागी	- शिक्षा से पीछा छूटेगा
कैलाश बैरवा	- मुझे मौका दो
सावरमल वर्मा	- घूम फिर कर आ जाते है
महेश चन्द शर्मा	- भूल बिसरे गीत
निर्मला मीना	- आ गई चक्कर में
पवन अरोड़ा	- वक्त का राजा
मुक्तानन्द अग्रवाल	- जय सहकार
राजन विशाल	- फिर मैदान में
महेन्द्र सोनी	- निष्ठा का जवाब नहीं
विजय पाल सिंह	- चलती का नाम गाड़ी
शैली कृष्णानी	- धीरे-धीरे
सुषमा अरोड़ा	- प्यारी बहना
उज्जवल राठौड़	- विश्वास की मिसाल
उमरदीन खान	- कलक्टरी छूट गई
अन्तर सिंह नेहरा	- बढ़ते कदम
गधेन्द्र भान चतुर्वेदी	- अकेला चलो
परमेश्वर लाल	- किसे धोक लगाऊं
महावीर प्रसाद वर्मा	- कौन पूछता है
विश्राम मीणा	- कब तक विश्राम करू
प्रकाश राज पुरोहित	- पांचों पानी में
जितेन्द्र कुमार सोनी	- चिड़ी बाज
इन्द्रजीत सिंह	- स्मार्ट
नेहा गिरी	- भोली भाली
विश्वमोहन शर्मा	- स्वच्छता की निशानी
ओम प्रकाश बुनकर	- काम से काम
कन्हैयालाल स्वामी	- जमीन का नाप जोख
महेन्द्र कुमार पारख	- विभाग चलता है
हद्रेश कुमार शर्मा	- गर्दिश से पीछा छूटा
नलनी कठोतिया	- संजीदा
सोहनलाल शर्मा	- महाज्ञानी
मेघराज सिंह रत्नु	- सदाबहार
अनुप्रेरणा सिंह कुन्तल	- बकाया भुगतान
राजेन्द्र विजय	- अपना सटलमेन्ट तो करें
शक्ति सिंह राठौड़	- सभ्य आदमी
निकेत शिवप्रसाद मदान	- शान्ति में विश्वास
संदेश नायक	- अब करके दिखाऊगां
शिवागी स्वर्णकार	- पल में तोला पल में मासा
अनुपमा जोरवाल	- गरीबों की दवाई
प्रेमसुख विश्नोई	- अधूरी जांच
अमित कु. अग्रवाल	- उपभोक्ता के पैर में
आशीष गुप्ता	- जमीन हरी भरी करेंगें
महावीर प्रसाद मीणा	- सपना जेडीए का
डॉ. रश्मि शर्मा	- पुराना घराना
इकबाल खान	- बेफिक्र
कल्पना अग्रवाल	- आरटीओ ठीक था
सुनील शर्मा	- कानून बाज
पुष्पा सत्यानी	- मौका दो
निशान्त जैन	- पर्यटन के अवसर
सीताराम जाट	- किसी का भला नहीं
अमित यादव	- आप समझे नहीं
अवधेश मीणा	- कुछ करके दिखाऊंगा
महेन्द्र खडगावत	- जमीन का आदमी

खाकी

एमएल लाठर	- कैप्टन कूल
उमेश मिश्रा	- जग्गा जासूस
यू.आर. साहू	- ठंडा बस्ता
भूपेन्द्र दक	- जेल की दीवार
राजीव शर्मा	- ट्रेनिंग सेंटर
हवा सिंह घुमरिया	- पुराना चावल
रवि प्रकाश महेरड़ा	- सरदर्दी
संजय अग्रवाल	- रेल का सिपाही
वीके सिंह	- गाड़ी घोड़ा
अशोक राठौड़	- रीट परीक्षा
बीएल सोनी	- बाज का पंजा
दिनेश एम एन	- टाइगर
आनंद श्रीवास्तव	- फेविकॉल का जोड़
अजय पाल लाम्बा	- दंगा-फंसाद
हैदरअली जैदी	- नाकाबंदी
वंदिता राणा	- अवैध तस्करी
सुनीता मीणा	- नारी सुरक्षा
प्रहलाद कृष्णियां	- नए खुलासे
रिचा तोमर	- ताबातोड़ कार्रवाई
परिस देशमुख	- परकोटा
मृदुल कच्छावा	- नया शिकारी
मनीष अग्रवाल	- ग्रामीण पुलिस
श्वेता धनकड़	- ट्रेफिक लाइट
मामन सिंह यादव	- मैट्रो स्टेशन

चीरफाड़

डॉ. सुधीर भंडारी	- वीआईपी इलाज
डॉ. विनय मल्होत्रा	- मौके पर चौका
डॉ. राजेश शर्मा	- हारी बाजी
डॉ. प्रदीप शर्मा	- टूटा दांत
डॉ. संदीप जसूसा	- कैंसर की गांठ
डॉ. राजीव बगरहट्टा	- दिल की रफ्तार
डॉ. मानप्रकाश	- कान का पर्दा
डॉ. अनिल शर्मा	- हार्ट अटैक
डॉ. शशि मोहन	- दिल में ब्लॉकेज
डॉ. अशोक गुप्ता	- नई पहचान
डॉ. अरविन्द शुक्ला	- बच्चों का अस्पताल
डॉ. अखिलेश जैन	- मानसिक रोगी
डॉ. बीडी सिन्हा	- दिमाग का कारीगर
डॉ. जगदीश मोदी	- ट्रोमा सेंटर
डॉ. आरसी मीणा	- बैशाखी
डॉ. संजय जैन	- पागल मरीज
डॉ. विनय तोमर	- खराब गुर्दा
डॉ. संदीप निझावन	- पेट का अफरा
डॉ. रमन शर्मा	- ओमिकोन
डॉ. रघुराज	- टीकाकरण
डॉ. अजीत सिंह	- तीसरी लहर
डॉ. भारती मल्होत्रा	- नया वैरिएंट
डॉ. नरोत्तम शर्मा	- जांच बढ़ाओं अभियान
डॉ. एस बनर्जी	- कोरोना का इलाज
डॉ. आई डी गुप्ता	- दिमाग खराब
डॉ. पुष्पा नागर	- दायी मां
डॉ. एम.एल. गुप्ता	- सभी की चहेते

बुलडोजर

गौरव गोयल	- बेदाग छवि
आनंदीलाल वैष्णव	- पांचों अंगुली घी में
जुगल किशोर मीणा	- जैसा साहब कहें
रघुवीर सैनी	- फेविकोल का जोड़, जेसीबी से तोड़
ओंकारमल राजोतिया	- खजाने की चाबी
अयूब खान	- कानून की पोथी
विनय कुमार	- प्लानिंग का खेल
महेश तिवाड़ी	- हरियाली की चकाचौंध
मानसिंह मीणा	- बातों का सौदागर
अशोक लोमोड़	- वनवास
वीरेन्द्र सिंह भाटी	- आजकल फ्री हूं
बलवंत लिठा	- यारी ही यारी
जगत राजेश्वर	- कमाऊ पूत
अशोक योगी	- उस्ताद आदमी
राम रतन शर्मा	- सरल स्वभाव
प्रवीण अग्रवाल	- शांति की नौकरी

नरकासुर

डॉ. सौम्या गुर्जर	- खूब लड़ी मर्दानी...
मुनेश गुर्जर	- कुर्सी बचाने की जुगत
पुनीत कर्णावट	- इधर चला मैं उधर चला
असलम फारूकी	- नेताजी की मेहरबानी से
कुसुम यादव	- विपक्षी सरदार
दिव्या सिंह	- अज्ञातवास
शील धाबाई	- चार दिन की चांदनी..
सुखप्रीत बंसल	- सपने अभी जिंदा हैं
मिनाक्षी शर्मा	- क्रांतिकारी
अभय पुरोहित	- दिन लद गये
जितेन्द्र श्रीमाली	- बिना गोली की बंदूक
दुर्गेश नंदिनी	- साफ-सुथरी छवि
राखी राठौड़	- बागवान
शेर सिंह धाकड़	- चाणक्य
रश्मि सैनी	- बत्ती गुल मी-र चालू
विनोद चौधरी	- नेताजी बिन सब सून
रमेश सैनी	- अब कौन पूछेगा
भारती लख्यानी	- मैं अनाड़ी, तू खिलाड़ी
पारस जैन	- कहां गये वो दिन
करण शर्मा	- कागजी नेता
महेश अग्रवाल	- युवा जोश
मनोज मुद्गल	- नेताजी की नेतागिरी

नरक निगम

यज्ञमित्र सिंह देव	- खतरों का खिलाड़ी
अवधेश मीणा	- युवा जोश, नीति ठोस
अचलेश्वर मीणा	- लालच ने मरवाया, यहां आके पछताया
संतोष गोयल	- सिरदर्दी की कुर्सी
सत्तार खान	- मैं किसी से कम नहीं
शिप्रा शर्मा	- सादगी का जवाब नहीं
करणी सिंह	- एकांतवास
ममता नागर	- दोनों हाथ में लड्डू
सेठाराम बंजारा	- हथौड़े में दम नहीं
इस्लाम खान	- पशुओं के पीछे दौड़-भाग
सुरेन्द्र यादव	- हर खेल में माहिर
महेश मान	- प्लानिंग की प्लानिंग
रविन्द्र सिंह	- संजीदगी सबसे न्यारी
अनिता मित्तल	- काम से काम
प्रदीप पारीक	- यमराज
अतुल शर्मा	- अपनी तो बल्ले-बल्ले
राजीव शर्मा	- सीधा-सच्चा आदमी
आशीष कुमार	- कचरे में फंस गया
के.के. गुप्ता	- तार में करंट
विद्या सैन	- लेडी सिंघम
छगनलाल	- प्रमोशन के जुगाड़ी
जगदीश फुलवारिया	- आग लगे तो बुझा दूं
रामकिशोर मीणा	- गुपचुप खेल
कविता चौधरी	- किसी की राई-दुहाई में नहीं
राजेश मीणा	- यारों का यार
मनोज गोस्वामी	- कुर्सी से फिसले
दिनेश गुप्ता	- हरफनमौला
कमलेश जैमन	- प्रपंच में कौन पड़े
नरेन्द्र मिश्रा	- इतिहास की व्याख्या
देवानंद शर्मा	- सन्यासी
मोनिका सोनी	- दिन फिरने का इंतजार
दीपक शर्मा	- दाई-माई
रूपाराम चौधरी	- साहबजी! मेहरबान
हिमांशु शर्मा	- मेरा क्या कसूर
यतेन्द्र सांखला	- अब बने बाबाजी
हरेन्द्र चिराणा	- कुर्सी का मोह न छूटे
के.के. मीणा	- खाली खजाने का खजांची
रश्मि कांकरिया	- काश! प्रमोशन मिल जाता
सोनिया अग्रवाल	- लाइसेंस का गणित
उमंग राजवंशी	- जोड़-तोड़ का गणित
आलोक श्रीवास्तव	- ऊपरी हवा का असर

काला कोट

सुधांशु कासलीवाल	- सर्व गुण संपन्न
एम.एस. सिंघवी	- सब ठीक कर दूंगा
राजदीपक रस्तोगी	- अपने मुंह मियां मिट्ठू
अश्विनी जैमन	- यारों का यार
आर एन माथुर	- हम भी थे दौड़ में
कमलाकर शर्मा	- यहां के रहे ना वहां के
आर बी माथुर	- जहां माल, वहां काम
नयना सर्राफ	- जाने क्या क्या कर गई
विभूति भूषण शर्मा	- मेरा हाथ मेरा भगवान
माधव मित्र शर्मा	- सट्टाबाज सरदार
तनवीर अहमद	- शायराना अंदाज
रामप्रताप सैनी	- संघर्षशील
संतकुमार जैन	- गुमनाम रहो, मस्त रहो
भरत व्यास	- निकल गया
आर पी सिंह	- फिर मेरी सरकार
विमल चोधरी	- सफाई तो तरसे
जी एस बाफना	- पर्दे के पीछे
नावेद रफीक खान	- मुझसे ना हो पायेगा
प्रतीक कासलीवाल	- चिट भी मेरी, पट भी मेरी
सुधीर गुप्ता	- कूल डूड
वीरेन्द्र लोढा	- तालू राम
एस एस होरा	- क्रिकेट में है दम
पुनीत सिंघवी	- मामा विधायक हमारे
रवि किरण माथुर	- मस्त मौजी
अनिल मेहता	- अपनी सरकार अपने जज
संदीप पाठक	- मेरा दिल जो चाहे थोड़ा पैसा
संदीप तनेजा	- होशियार
महेन्द्र शानडिल्य	- सबका नाम पता जानने वाला
अंशुमान सक्सैना	- सर्वगुण महासिचव
शंशाक अग्रवाल	- वरिष्ठ उपाध्यक्ष
अनंत कासलीवाल	- यारों का यार
दक्ष पारीक	- छोटे चाणक्य
दर्श पारीक	- अब तो छुट्टी ले लो
गोविन्द पुरोहित	- राजाबाबू
राजेन्द्र प्रसाद	- विद्यमान वकील
शीतल मिर्धा	- सरकारी रानी
ए के शर्मा	- चलता चला चल
शैलेश प्रकाश शर्मा	- जवानी जाती ही नहीं
सारांश सैनी	- सबसे बड़ी गाडीवाला
शोभित तिवारी	- जी-हुजूर
विज्ञान शाह	- उभरते अधिवक्ता
अनिल उपमन	- सारी मेहनत जज बनने के लिए
राजेश मेहर्षि	- हर जगह उपस्थित रहने वाला

कारोबारी डंक

रोहिताश नोलखा	5 एमएल मिल्क	अच्छी सेहत का वादा
मृणाल पुरोहित	एयू फाइनेंस	आगे बढ़ते रहो
रानू जिंदल	आरी तारी	सुंदर को अति सुंदर बनाना
मनोज पांडे	आवास फाइनेंस	लोन की दुनिया
कृष्ण यादव	अभिव्यक्ति इंस्टीटयूट	सभी को शिक्षित करके रहूँगा
उज्जवल पूनिया	आधार प्राइम रियल होम्स	सभी को अपना घर दिला के रहूंगा
डॉ. लवलीश जैन	आदिनाथ ईएनटी अस्पताल	भीड से हट कर
पंकज जैन	एगॉन इलेक्ट्रॉनिक्स	कामयाबी के सफर में बढ़ते हुए
मुकुल गोयल	अग्रवाल कॉलेज	हंसते हॅसाते जेब हल्की करो
मनीष	अग्रवाल कॉलेज	कोई यहॉ भी एडमिशन करवाएगा
सुनील जैन	अक्षत	एक अलग पहचान
अनुराग शर्मा	अलौकिक	इतना सन्नाटा क्यों है भाई
प्रशांत गुप्ता	अनुकंपा	बदलाव की तरफ बढ़ते कदम
सी.के. शर्मा	एपेक्स यूनिवर्सिटी	सौम्य और सरल स्वाभाव
मेघा जैन	आर्च	बहुत ही मीठी वाणी